नेहरू बाल पुस्तकालय

भीमभाई की कमीज

छोटुभाई जो. भट्ट

अनुवाद

वर्षा दास

चित्रांकन

सुभाष रॉय

nbt.india
एकः सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

nbt.india

बहुत पुरानी बात है।

एक मां थीं।
उनकी सात संतानें थीं।
बेचारी काफी कमजोर थीं।
उनके परिवार में और कोई नहीं था।
सारे बालक छोटे थे।
उनका लालन पालन
वही करती थी।

गांव के किनारे एक छोटी सी कुटिया थी।
उसमें ये सारे रहते थे।

सुबह से शाम तक
मां बेचारी दूसरों के घर काम
किया करती थी।
किसी का पानी भर दिया,
किसी का अनाज पीस दिया,
किसी के बरतन मांजे।

बड़ी मेहनत से मां
सबका पेट भरती थी।

अब उमर बढ़ रही थी,
शरीर में ताकत नहीं थी,
काम करते बनता नहीं था, पर
आखिर मां तो मां ही है ना!

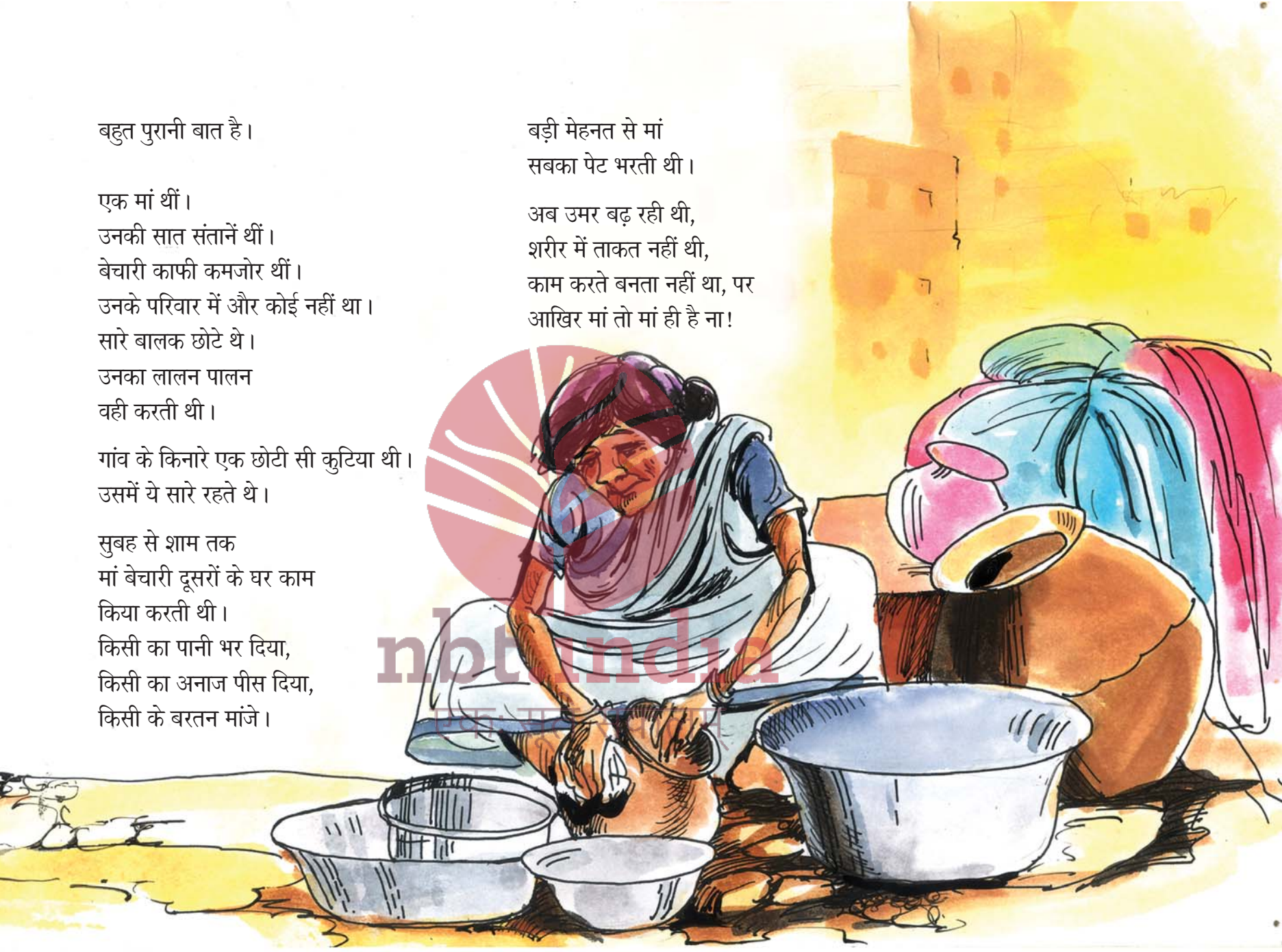

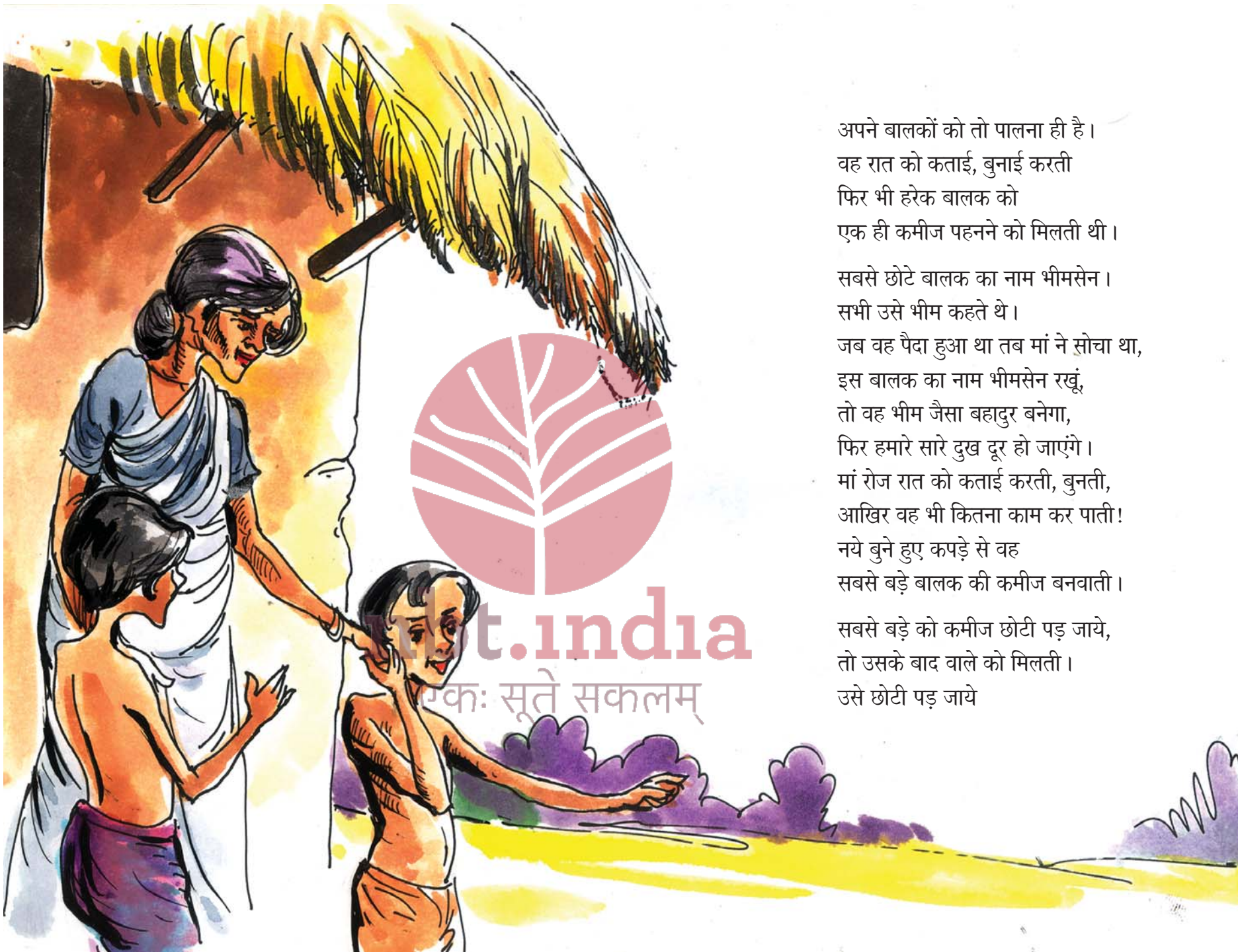

अपने बालकों को तो पालना ही है।
वह रात को कताई, बुनाई करती
फिर भी हरेक बालक को
एक ही कमीज पहनने को मिलती थी।

सबसे छोटे बालक का नाम भीमसेन।
सभी उसे भीम कहते थे।
जब वह पैदा हुआ था तब मां ने सोचा था,
इस बालक का नाम भीमसेन रखूं,
तो वह भीम जैसा बहादुर बनेगा,
फिर हमारे सारे दुख दूर हो जाएंगे।
मां रोज रात को कताई करती, बुनती,
आखिर वह भी कितना काम कर पाती!
नये बुने हुए कपड़े से वह
सबसे बड़े बालक की कमीज बनवाती।

सबसे बड़े को कमीज छोटी पड़ जाये,
तो उसके बाद वाले को मिलती।
उसे छोटी पड़ जाये

ot.india
एकः सूते सकलम्

तब उससे छोटे की बारी आती।
यूं करते करते
आखिर वह कमीज भीम को मिलती।
बेचारे भीम को हमेशा
घिसी, फटी, छेदों वाली कमीज
ही मिलती।

उसका नाम तो था भीमसेन
पर बेचारा दुबला पतला था,
फिर भी बड़ा खुशमिजाजी था,
उसके चेहरे पर सदा हंसी होती थी।
वह कभी किसी से लड़ता नहीं था,
सारे भाई-बहन खुशी से रहते थे।
आपस में मौज करते थे।

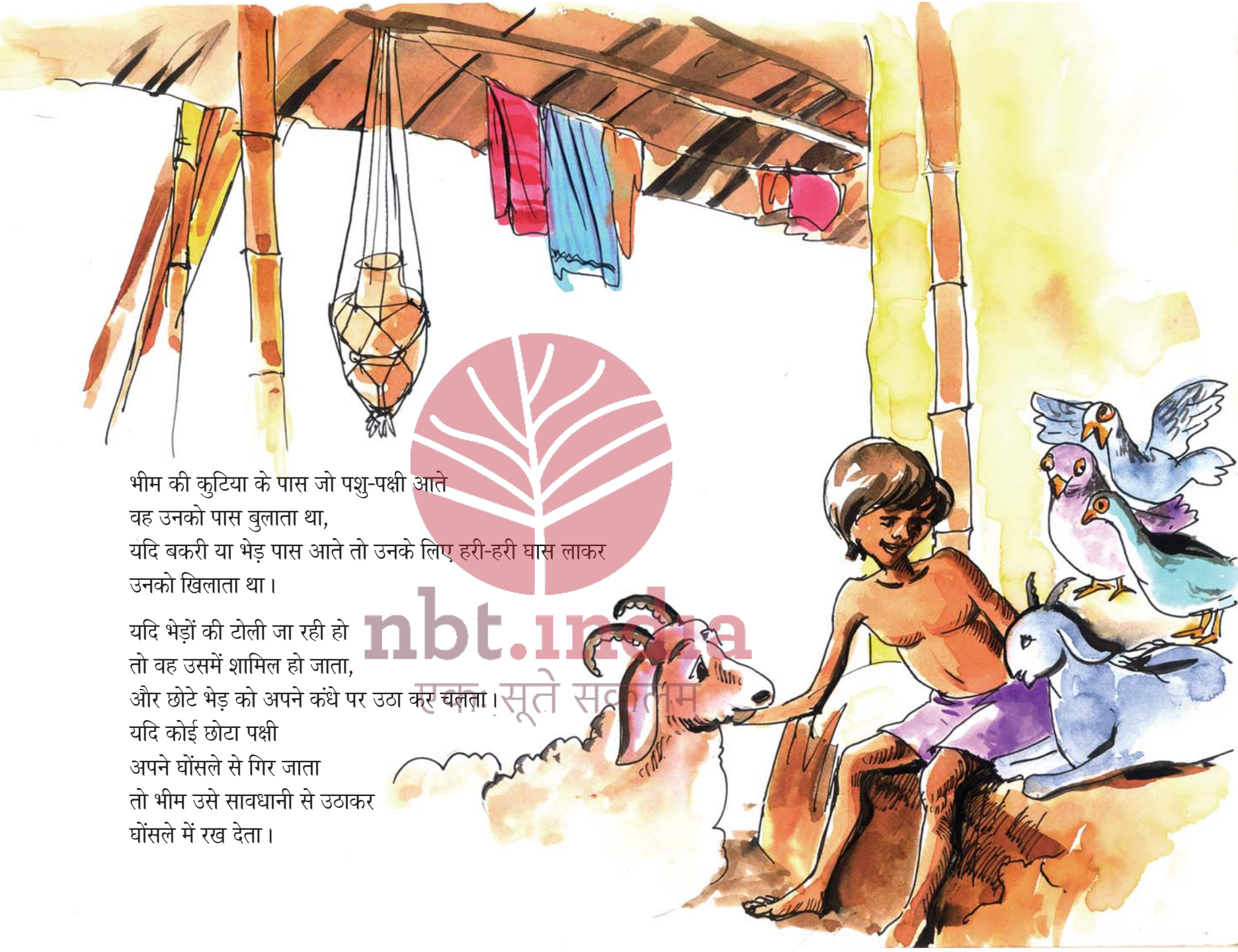

भीम की कुटिया के पास जो पशु-पक्षी आते
वह उनको पास बुलाता था,
यदि बकरी या भेड़ पास आते तो उनके लिए हरी-हरी घास लाकर
उनको खिलाता था।

यदि भेड़ों की टोली जा रही हो
तो वह उसमें शामिल हो जाता,
और छोटे भेड़ को अपने कंधे पर उठा कर चलता।
यदि कोई छोटा पक्षी
अपने घोंसले से गिर जाता
तो भीम उसे सावधानी से उठाकर
घोंसले में रख देता।

nbt.india
एक सूते सकलम

पक्षी भी उसके साथ घुलमिल गये थे।
भीम जैसे ही हथेली में दाने लेकर बैठता,
पक्षी तुरंत दाने चुगने चले आते।
एक दिन उसने अपने हाथ में फूल लिये थे,
तो थोड़ी ही देर में
आसपास से मधुमक्खियां आकर गुनगुनाने लगीं।
जब भीम अपनी हथेली में मकड़ी को रखता था,
तो वह उसके शरीर पर चलने लगती थी।
भीम को गुदगुदी होती थी,
वह खिलखिला कर हंसता था।

एक दिन भीम की कमीज
कंधे से इस तरह फट चुकी थी
कि वह शरीर पर टिकती ही नहीं थी।
कमीज नीचे गिर जाये
तो भीम हंसने लगे।
उसने दो-तीन बार कमीज कंधे पर चढ़ाई,
हर बार वह फिसल कर नीचे गिर पड़ी।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

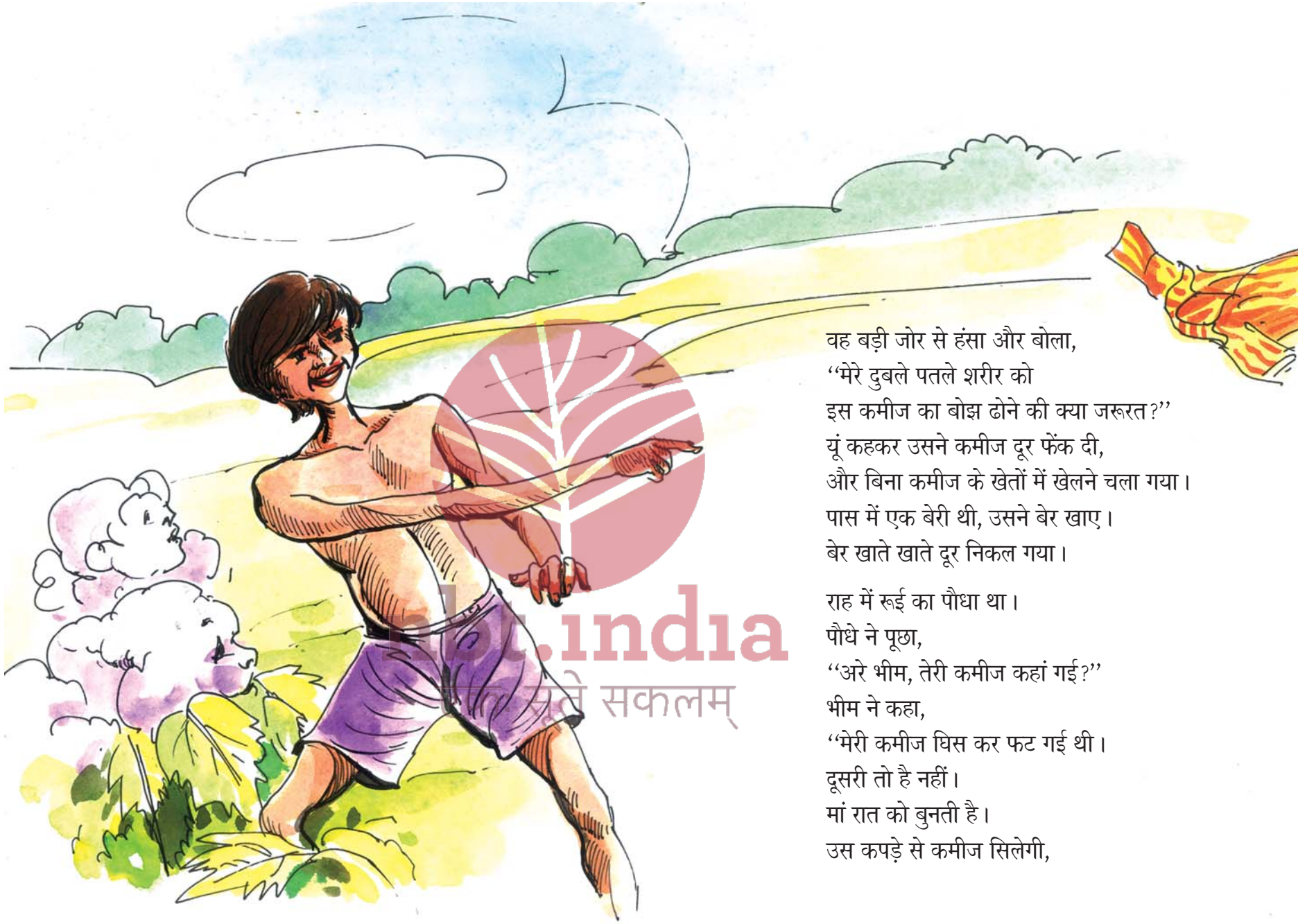

nbt.india
एकः सूते सकलम्

वह बड़ी जोर से हंसा और बोला,
"मेरे दुबले पतले शरीर को
इस कमीज का बोझ ढोने की क्या जरूरत?"
यूं कहकर उसने कमीज दूर फेंक दी,
और बिना कमीज के खेतों में खेलने चला गया।
पास में एक बेरी थी, उसने बेर खाए।
बेर खाते खाते दूर निकल गया।

राह में रूई का पौधा था।
पौधे ने पूछा,
"अरे भीम, तेरी कमीज कहां गई?"
भीम ने कहा,
"मेरी कमीज घिस कर फट गई थी।
दूसरी तो है नहीं।
मां रात को बुनती है।
उस कपड़े से कमीज सिलेगी,

तब मेरे बड़े भाई को मिलेगी।
मैं तो पुरानी ही पहनता हूं।

“बस एक बार
बिलकुल नई कमीज मिल जाये
तो मजा आ जाये!
पर कोई बात नहीं,
कमीज नहीं होगी तो भी चलेगा।
यूं बिना कमीज के घूमने का भी खास मजा है।”
यह सुनकर रूई के पौधे को दया आई।

उसने कहा,
“अरे भाई, तुम मेरी रूई ले जाओ ना!
उसकी कताई, बुनाई करके कमीज बनाना।”
यूं कहकर पौधे ने भीम को ढेर सारी रूई दी।
उसे लेकर भीम आगे चला।
इतने में सामने बबूल का पेड़ आया।

बबूल ने पूछा,
“अरे भीमभाई, यूं बिना कमीज के कहां चले?
और हाथ में क्या पकड़ रखा है?”

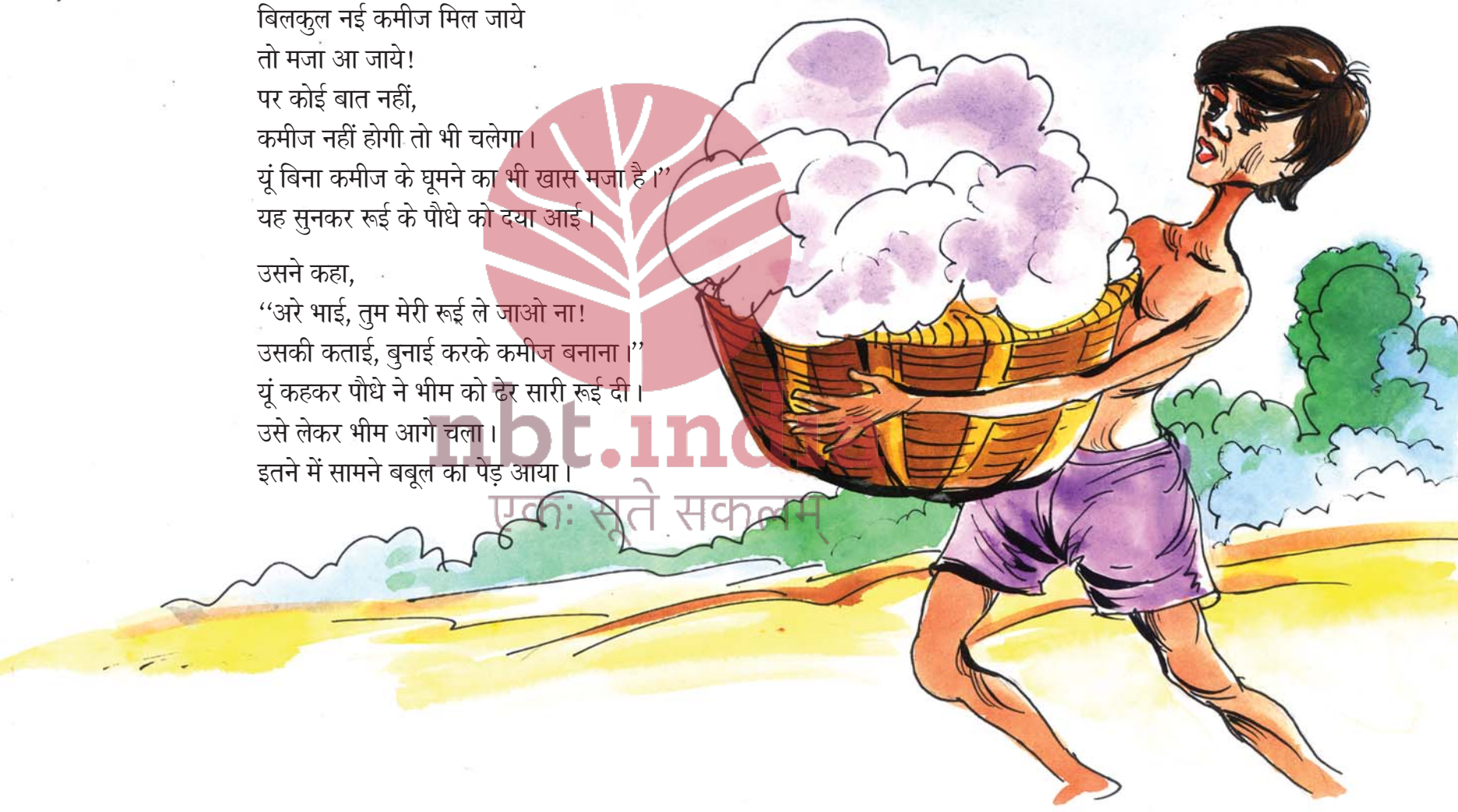

nbt.india
एकः सूते सकलम्

भीम बोला,
"मेरी कमीज तो फट गई है।
रूई के पौधे ने रूई दी है,
मां उसकी कताई-बुनाई करके कपड़ा बनायेंगी,
और तब नयी कमीज बनेगी।"
बबूल ने कहा,
"लेकिन भीमभाई, इस रूई में तो बहुत बिनोले हैं।
लाइए, मेरे कांटों से मैं बिनोले निकाल दूं,
इसे साफ कर दूं।"

nbt.india
एकः सूते सकलम्

बबूल ने तुरंत रूई ली,
देखते देखते अपने कांटों से उसे
साफ कर दिया।
साफ रूई लेकर भीम आगे चला।
राह में एक मकड़ी इधर से उधर जा रही थी,
अपना जाल बुन रही थी।
भीम को देखकर उसने पूछा,
''भीमभाई, यूं बिना कमीज के कहां जा रहे हो?
और यह क्या पकड़ रखा है?''

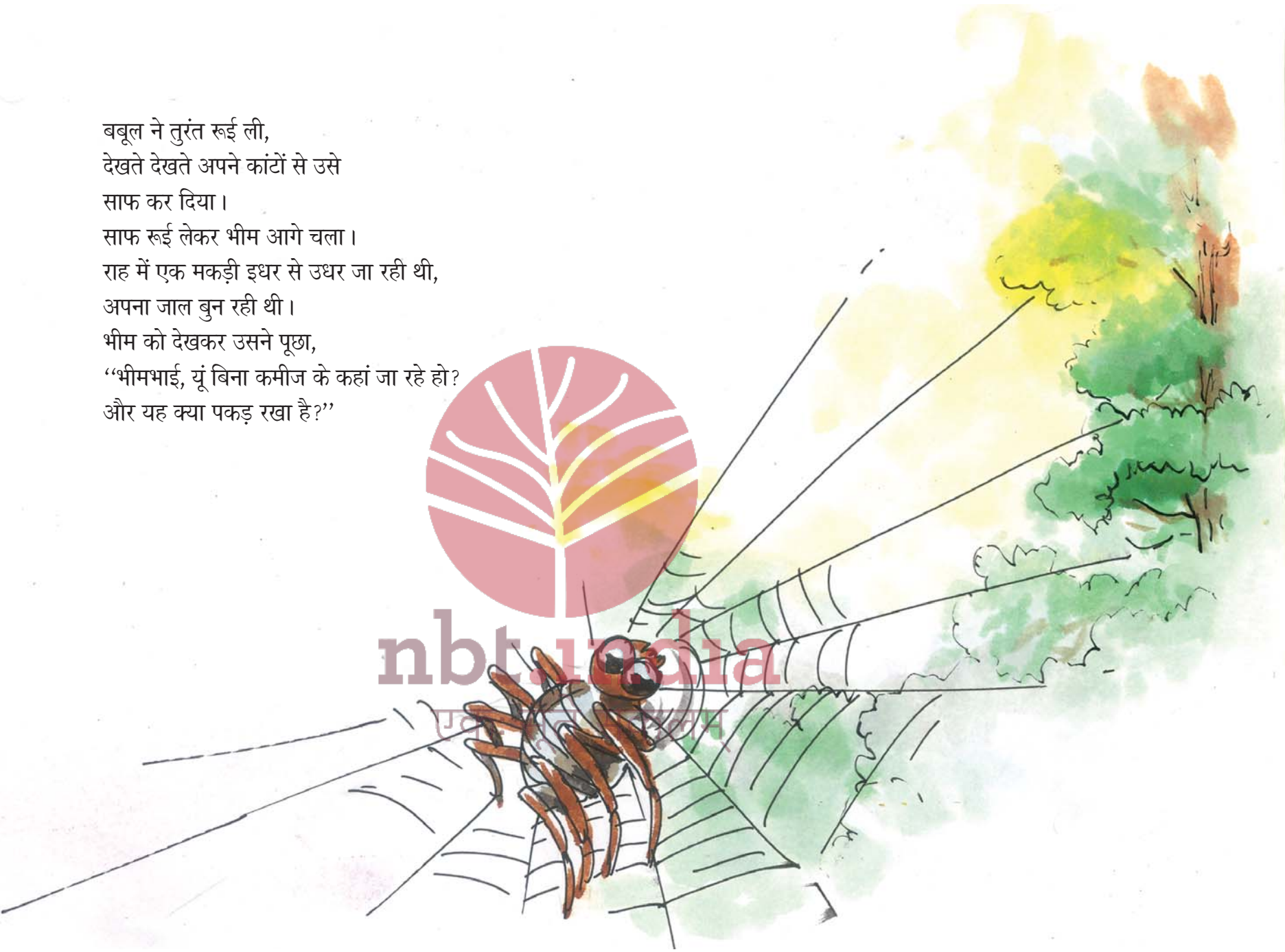

nbt.urdu

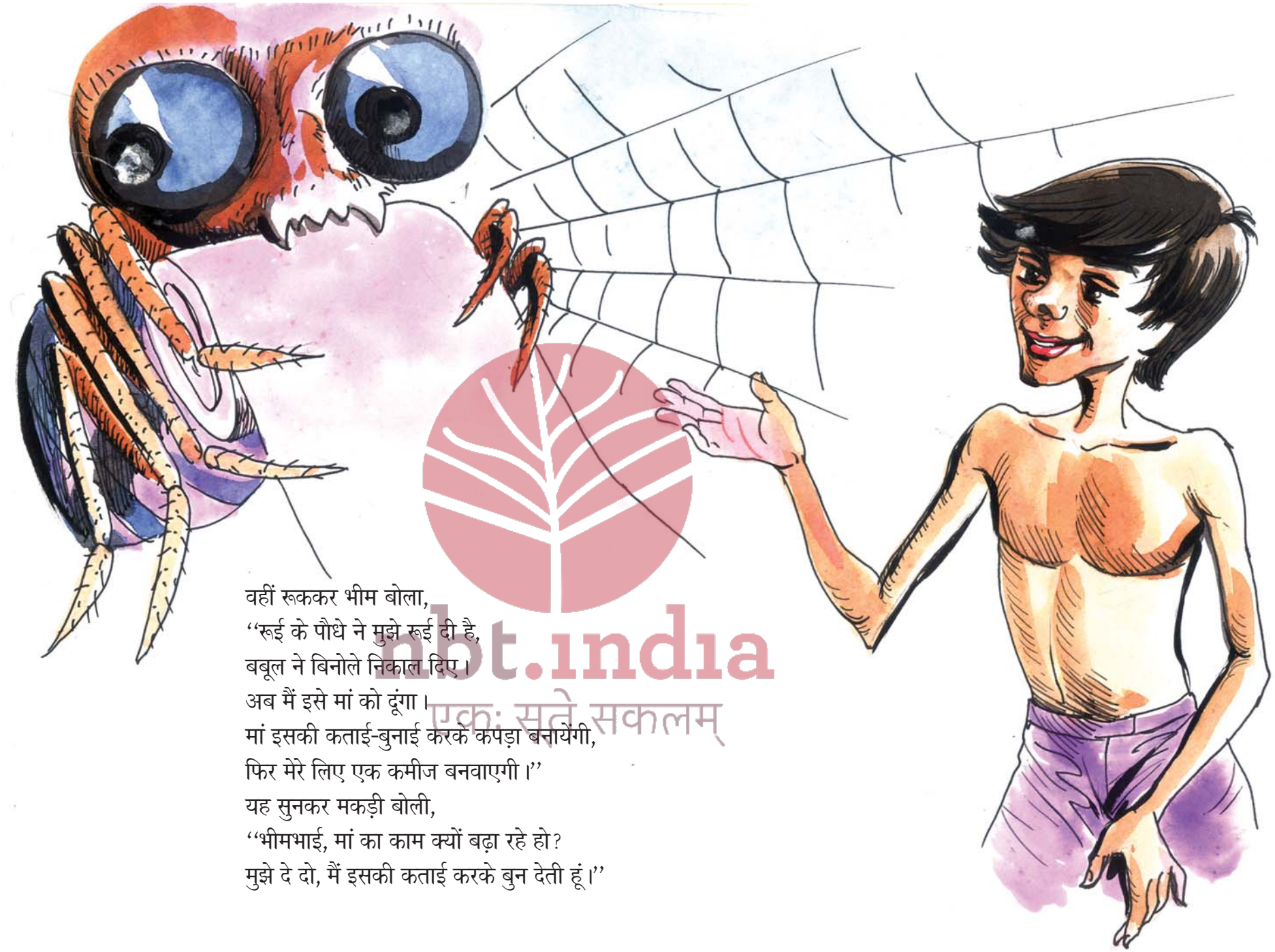

वहीं रूककर भीम बोला,
''रूई के पौधे ने मुझे रूई दी है,
बबूल ने बिनोले निकाल दिए।
अब मैं इसे मां को दूंगा।
मां इसकी कताई-बुनाई करके कपड़ा बनायेंगी,
फिर मेरे लिए एक कमीज बनवाएगी।''
यह सुनकर मकड़ी बोली,
''भीमभाई, मां का काम क्यों बढ़ा रहे हो?
मुझे दे दो, मैं इसकी कताई करके बुन देती हूं।''

nbt.india
एक: सते सकलम्

भीम ने मकड़ी को रूई दी,
और मकड़ी ने देखते देखते
उसकी कताई करके कपड़ा बुन डाला।
इतना बारीक कपड़ा,
मानों हवा से भी पतला।
खुली आंखों से भी देखते न बने!
और कितना नरम!
फूलों की पराग भी इतनी कोमल नहीं होती।
इतना बढ़िया कपड़ा देखकर
भीम खुश-खुश हो गया।

मां को कपड़ा दिखाने भीम उतावला हो गया।
वह कपड़ा लेकर दौड़ पड़ा।
तो राह में उसे चूहा मिला।
चूहे ने पूछा, ''अरे भीमभाई, दौड़ क्यों रहे हो?''
भीम ने कहा,
''मेरी कमीज बनवाने के लिए।
रूई के पौधे ने रूई दी,
बबूल ने उसके बिनोले निकाले,
और मकड़ी ने रूई की कताई करके बुन दी।
मैं मां को कपड़ा दिखाने जा रहा हूं।
मां इसकी कमीज बनवा देगी।''

nbt.india
एकः सूते सकलम्

यह सुनकर चूहा बोला,
"तब तो भीमभाई, मुझे ही दे दो।
मैं अपने दांतों से कपड़ा काट दूंगा।"
चूहे ने चुटकी में कपड़ा काट दिया।
पास में एक बया बैठा था।
इन दोनों की बातें सुनकर बोला,
"लाओ भीमभाई
मैं कमीज सी दूं।
तुम्हारी मां की मेहनत बच जाएगी।"

बया ने कटा हुआ कपड़ा लिया,
मकड़ी के जाल से धागा बनाया,
और अपनी चोंच से छेद बनाकर,
पटपट कमीज सी डाली।
कमीज इतनी बढ़िया बनी थी,
कि भीमभाई तो खुश-खुश।
उसने तो एकदम से कमीज पहन ली
और मां को दिखाने के लिए दौड़ पड़ा।

अब एक गिलहरी से भेंट हुई।
भीमभाई को दौड़ता देख गिलहरी बोली,
"अरे दोस्त, जरा रूक जा।"
भीम बोला,

"नहीं-नहीं, अभी नहीं, बाद में आऊंगा।
मुझे मां को मेरी बढ़िया सी कमीज दिखानी है।"
कहकर भीम ने अपनी कमीज दिखाई,
और पूरी कहानी गिलहरी को सुनाई।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

यह सुनकर गिलहरी बोली,
“तब तो भीमभाई, जरा रूक जाओ।
मैं कमीज पर अच्छा सा डिजाइन बना दूं।”
फिर तो गिलहरी ने फूलों से
तरह-तरह के रंग लिए,
अपनी पूंछ की कूची बनाई,
और कमीज के गले पर, बांहों पर
सुंदर डिजाइन बनाने लगी।
भीमभाई तो खुशी से नाच उठा!

कमीज पहनकर भीम दौड़ा।
राह में मां मिल गई।
मां को देखते ही वह बोला,
मां, मां, मेरी कमीज तो देखो!

“बताओ तो, है न बढ़िया?”
मां ने उसे गले लगाया
और बोलीः
“वाह बेटा! ऐसी कमीज तो मैंने
कहीं नहीं देखी!”
भीमभाई तो खुश-खुश!

nbt.india
एकः सूते सकलम्

nbt.india
एकः सूते सकलम्

ISBN 978-81-237-5702-5

पहला संस्करण : 2009

छठी आवृत्ति : 2019 *(शक 1941)*

© श्रेयस फाउंडेशन, शाहीबाग, अहमदाबाद

गुजराती से हिंदी अनुवाद © राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

Bhim bhai Kee Kamij (*Hindi*)

₹ 35.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II

वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित

Website: www.nbtindia.gov.in

nbt.india

एकः सूते सकलम्

मुद्रकः चंदू प्रेस, दिल्ली-110092